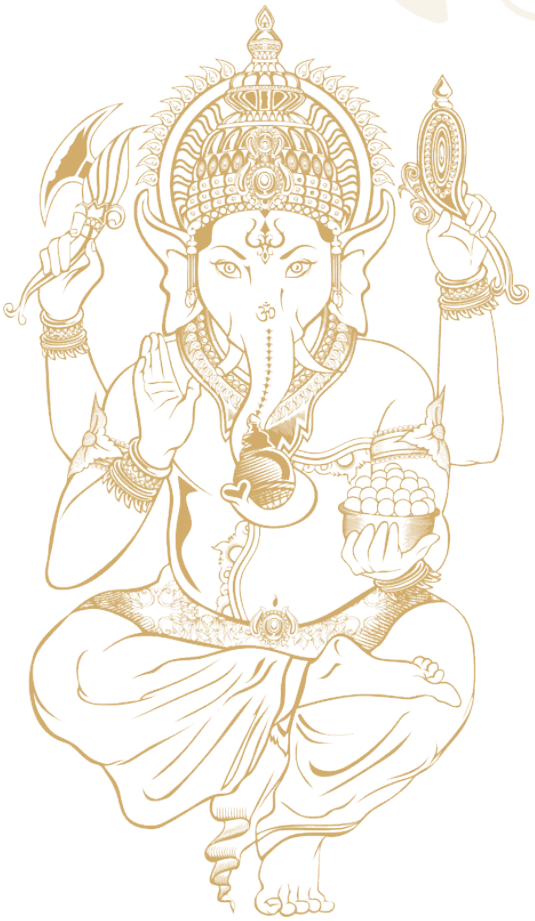

D

Puja

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120884602

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
24-25/06/2000 :	जन्म तिथि	: 29/07/2002
शनि-रविवार :	दिन	: सोमवार
घंटे 03:00:00 :	जन्म समय	: 11:00:00 घंटे
घटी 53:58:14 :	जन्म समय(घटी)	: 13:18:24 घटी
India :	देश	: India
Delhi :	स्थान	: Delhi
28:39:00 उत्तर :	अक्षांश	: 28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व :	रेखांश	: 77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08 :	स्थानिक संस्कार	: -00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
05:24:42 :	सूर्योदय	: 05:40:38
19:22:32 :	सूर्यास्त	: 19:14:05
23:51:34 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:53:19

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शनि 12वर्ष 3मा 11दि	02:33:56	वृष	लग्न	कन्या	20:33:06	शनि 13वर्ष 8मा 21दि
बुध	09:47:07	मिथु	सूर्य	कर्क	12:03:03	बुध
05/10/2012	08:02:55	मीन	चंद्र	मीन	07:02:02	20/04/2016
05/10/2029	11:44:31	मिथु	मंगल	कर्क	16:06:12	20/04/2033
बुध 04/03/2015	26:00:46	मिथु व	बुध	कर्क	20:59:47	बुध 16/09/2018
केतु 29/02/2016	04:59:33	वृष	गुरु	कर्क	05:20:09	केतु 13/09/2019
शुक्र 30/12/2018	13:28:27	मिथु	शुक्र	सिंह	26:23:41	शुक्र 14/07/2022
सूर्य 05/11/2019	02:07:10	वृष	शनि	मिथु	00:40:45	सूर्य 21/05/2023
चन्द्र 06/04/2021	00:55:11	कर्क व	राहु व	वृष	22:39:39	चन्द्र 19/10/2024
मंगल 03/04/2022	00:55:11	मक व	केतु व	वृश्चि	22:39:39	मंगल 16/10/2025
राहु 20/10/2024	26:36:00	मक व	हर्ष व	कुंभ	03:48:32	राहु 05/05/2028
गुरु 26/01/2027	12:09:20	मक व	नेप व	मक	15:47:54	गुरु 11/08/2030
शनि 05/10/2029	17:04:30	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	21:13:06	शनि 20/04/2033

लग्न-चलित

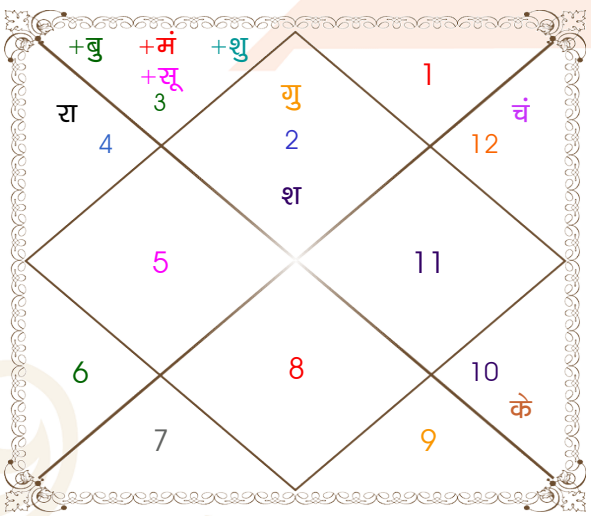

लग्न-चलित

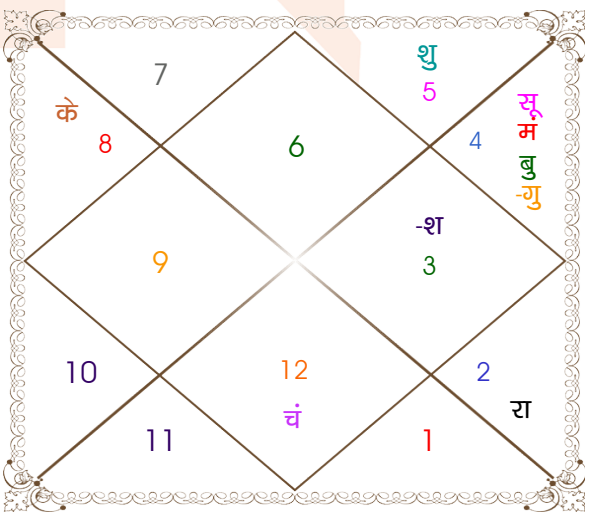

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	गौ	गौ	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	मध्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

क का वर्ग सर्प है तथा च्नरं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क और च्नरं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

क मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

च्नरं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

क तथा च्नरं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।